डॉ॰पी॰एस॰पाटील
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६ ००४

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु शोध प्रबंध को परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर – ४१६ ००४

४ दिसंबर, १९९५ ·

डॉ.डी.के. गोटुरी,
एम.ए.,बी.एड.,एम.फिल,
पीएच.डी.
अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
डॉ.घाळी कॉलेज,
गडहिंग्लज, जि: कोल्हापूर

प्र मा ण प त्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि कु. बिलकीस अबुसाहेब मोडक ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम.फिल (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध यशपाल के " मनुष्य के रूप " उपन्यास का अनुशीलन मेरे मार्गदर्शन में लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किये गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं। प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मै पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

निर्देशक

कोल्हापुर। (डॉ.डी.के. गोटुरी)

दिनांक : : :१९९५।

प्राक्कथन

'यशपाल' आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य के एक सफल और अद्वितीय साहित्यकार है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक कालतक साहित्य ने बहुत ही प्रगति पथ पर कदम रखा है। साहित्य की उपन्यास विधा का प्रवाह भी अपनी अबाध गति से बढताही गया। कुछ गिने चुने उपन्यासकारों की तरह 'यशपाल' के उपन्यासों में समाज जीवन की वास्तविकता का चित्र प्रतिबिंबीत होता है। यशपाल के उपन्यास पढते हुये पाठक वास्तविक जगत में खो जाते है। यशपाल के उपन्यास का आरंभ इतना रसिला है तो फिर उसका अंतिम स्वरुप क्या होगा। यह सोचने में पाठक मग्न हो जाते है। यशपाल के उपन्यास पढने के बाद मुझे 'मनुष्य के रूप' यह उपन्यास अपने शोध प्रबंध के लिए उचित लगा। यशपाल का यह उपन्यास पढने के बाद हम इस बात का अंदाजा लगा सकते है की, यशपालजी ने मनुष्य के हर रूप को कितनी सूक्ष्मता और बारिकीसे जाँचा और परखा है। मनुष्य के कितने रूप होते है ? व्यक्तिगत जीवन में मनुष्य सिर्फ अपने इर्द-गिर्द मंडरानेवाले लोगोंकी ही जानकारी प्राप्त कर सकते है लेकिन यशपाल के उपन्यासों को पढने से हम इस बातसे बहुत दूर निकल जाते है और मनुष्य के हजारों रूपोंका आकलन होता है।

'मनुष्य के रूप' उपन्यास पढने के बाद मेरे मन में प्रश्न खडे हुए (१) क्या वास्तविक जगत् में मनुष्य के इतने रूप हो सकते है ? (२) क्या मनुष्य हालात और परिस्थितिसे इतना बदल सकता है ? (३) क्या विधवा होना समाज की दृष्टिसे गुनाह है ?

इन प्रश्नोंका समाधान ढूँढते समय मैंने यशपाल के 'मनुष्य के रूप' उपन्यास का अनुशीलन करने का यत्न किया है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध छः अध्यायोंमें विभाजित है।

प्रथम अध्याय -

यशपाल का व्यक्तित्व और कृतित्व :

कथानक ही वह वस्तु होती है जिसपर उपन्यास का भवन खडा होता है। उपन्यासकार इसी कथावस्तु के माध्यम से जीवन विषायक दर्शन प्रस्तुत कर, पाठकोंको अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए बाध्य करते है। यशपाल अपने युग के यथार्थवादी और क्रांतिकारी उपन्यासकार थे। चाहे कलम का माध्यम हो या, तलवार का माध्यम हो। यशपाल ने अनेक मजबूरियों और हालातोंसे झूझते हुअे भी बडे ही साहस और फूर्ति से अपने साहित्य के हर क्षेत्र में अपनी भावनाओं को उद्दिपित किया है। यशपाल के कथानकों में रोचकता ,सरलता,निर्माण कौशल्य, मौलिकता के सारे गुण है इसलिए उनके उपन्यास मौलिक बन सके। वे सदाही अमर रहें।

द्वितीय अध्याय -

मनुष्य के रूप उपन्यास की कथावस्तु --

प्रस्तुत उपन्यास का विषाय विधवा नारी की आत्मनिर्भरता,सुख-दु:ख और संघर्ष से जुडा हुआ है। उपन्यास पहाडी जीवन से संबंधित है इसलिए वातावरण और परिस्थितिके अनुरूप लेखक ने उसे स्वाभाविक बनाया है। वैसे उपन्यास की कथा घटनाप्रधान है। नारी पर किये गये अत्याचार, पुलिस का अन्याय, जेल जीवन,क्रांति,संघर्ष,राष्ट्राभिमान इन सभी घटनाओं से कथा सजीव और रोचक हो गयी है। वातावरण की सजीवता एवं चित्रात्मकता पहाडी जीवन में ही देखी जा सकती है। नारी की आत्मनिर्भरता को लेखक ने बडे ही सुन्दर ढंग से प्रेक्षोपितकिया है।

तृतीय अध्याय -

'मनुष्य के रूप' उपन्यास के पात्र एवं चरित्र चित्रण --

हर एक पात्र ने अपनी अदाकारी बडीही बेखुबीसे निभायी है। मनुष्य के हजारों रूपोंको बडे ही नाटकीय ढंग से सजाया है। नारी की आत्मनिर्भरता और संघर्ष ही केंद्रिय तत्व होने के कारण नारी चरित्र पर ज्यादा जोर दिया गया है। बाकी के पात्र भी किसी ना किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते दृष्टिगोचर होते है। चरित्र चित्रण की दृष्टिसे पात्रों को गतिशील रखने का विशेष प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय -

'मनुष्य के रूप' उपन्यास का देशकाल वातावरण --

उपन्यास का वातावरण, उपन्यास की कथावस्तु पात्र और घटना के अनुरूप है। कुछ घटनाएँ सामाजिक और कुछ घटनाएँ राजनीतिक जान पडती है, और विराट पटभूमि अपनी परिधि में समेटे हुये है। इस उपन्यास में लेखक ने परिस्थितिके अनुरूप वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाओं के अनेक पहलुओं पर विस्तृत प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है।

पंचम अध्याय -

'मनुष्य के रूप' उपन्यास की भाषा-शैली --

भाषा, भाव और कल्पना के अनुरूप कथानक की शोभा बढानेवाला तत्व भाषा शैली कहा जा सकता है। पात्रानुकूल तथा परिवेश के अनुकूल भाषा प्रयोगमें यशपाल हमेशा जागृत और सिध्दहस्त रहे है। इस उपन्यास में पात्रों के

अनुरूप भाषा का प्रयोग कर इसे और ही रोचक बना दिया है ।

षाष्ठ अध्याय -

'मनुष्य के रूप' उपन्यास का उद्देश्य --

कोई भी उपन्यास लिखने के पीछे यशपाल का उद्देश्य रहा है,' मनुष्य व्दारा मनुष्य' का शोषाण ना हो इस बातका साहित्य व्दारा समाज के सामने लाना,नारी जागृति व्दारा नारी की शोषाण से मुक्ति और नारी की आत्मनिर्भरता से नारी की स्वतंत्रता,यही उद्देश्य है ।

यशपाल को यह बताना है कि, नारी के कितने रूप हो सकते है,मनुष्य परिस्थिति के अनुरूप क्या से क्या बन सकता है, आदि बातोंको पाठकों के सम्मुख रखकर,उन्हें सोचने के लिए बाध्य करना रचनाकार का उद्देश्य रहा है ।

उपसंहार --

इस विषाय का अनुसंधान करते समय मेरे मन में जो सवाल खडे हुए थे उनके जवाब मैंने उपसंहार में दर्ज किये है और विवेचन के उपरांत प्राप्त निष्कर्ष दिए है ।

परिशिष्ट तथा संदर्भ ग्रंथ सूची --

प्रस्तुत लघु प्रबंध में परिशिष्ट के साथ ही संदर्भ ग्रंथ सूची का एक विशिष्ट सा क्रम रखा गया है । सूची अकारादिक्रम के अनुसार तैयार की गयी है ।

कृतज्ञता ज्ञापन --

मेरे जीवन का हर कार्य मुझे अपनी माताजी के स्मरण के बिना अधूरा-सा लगता है । यह कार्य भी उन्हीं के आशीर्वाद का फल है ऐसी मेरी धारणा है । मेरे पिताजी ने इस कार्य में मेरी प्रेरणा बढायी यह उन्हीं के विश्वास का नतीजा है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के लेखन को पूरा करने के लिए डॉ.डी.के गोटुरी सर का मुझे पूरा सहयोग मिला। उन्होंने अपनी सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजूद भी इस लघु शोध-प्रबन्ध का प्रत्येक अध्याय अत्यंत सूक्ष्मता से देखकर मुझे निरंतर नयी दृष्टि देने का प्रयास किया है। उनका सत्कार्य अनमोल है। सौ.भाभीजी ने मुझे इस कार्य में प्रोत्साहित कर मेरी मदद की। मै इन दोनोंकी हृदय से ऋतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

हमारे हिंदी विभाग के प्रमुख डॉ.पी.एस.पाटील सर और डॉ.अर्जुन चव्हाण सर ने हर कार्य में मेरी सराहना कर हौसला अफजाई की, मै उनकी शुक्रगुजार हूँ। डॉ.सुनीलकुमार लवटे सर का आशीर्वाद और अपनत्व के लिए आभारी हूँ।

मेरे कॉलेज याने कन्या महाविद्यालय, इचलकरंजी के प्राचार्य डॉ.एस.एस. जाधव जी को धन्यवाद देते हुअे उनके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। कॉलेज के अकौन्टट श्री बी.डी.लाखडे सर ने इस कार्य को पूरा करने के लिए इतनी मदद की जैसे एक पेड हर मौसम में खडा रहकर राहगीरों को छाया देता है, मै उनकी तहे दिलसे शुक्रगुजार हूँ। कॉलेज के ऑफिस अधिक्षाक श्री बी.एम.परदेशी सर ने हर समय इस कार्य को पूरा करने की याद दिलाकर मेरा निश्चय दृढ किया। मै उनकी आभारी हूँ। मेरे कॉलेज के ऑफिस स्टाफ और ग्रंथालय स्टाफने परोक्षा रूपसे मेरी सहायता की,मै सबकी ऋणी हूँ। आर्टस ,सायन्स अॅण्ड कॉमर्स कॉलेज के ग्रंथपाल श्री आयरे सर ने पुस्तकों को समय समय पर उपलब्ध करा के जो सहायता दी है, उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। क.सेवायोजन अधिकारी श्री मो.बा. देवकर और उनके सहकारियों ने मुझे मदद की मै उनके प्रति आभारी हूँ। मेरी सहेलियाँ शाहीदा और सुषामा की ऋणी हूँ। नाझीम,नाझीया ने मुझे इस कार्य को पूरा करने के लिए बहुत बडा प्रोत्साहन और योगदान दिया। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध का अत्यंत लगन एवम् परिश्रमपूर्वक टंकण कर श्री बाळकृष्ण रा.सावंत ने मुझे

उपकृत किया है अत: वे धन्यवाद के पात्र है।

इस कार्य को संपन्न बनाने के लिए विद्वानों एवं सज्जनों ने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से मेरी सहायता की है अन्त में मै उन सब की आभारी हूँ।

Bhadak
(कु.बी.अे.भोडक)

कोल्हापुर।
दिनांक : ७ :१२:१९९५।